आलस्य और अलबेलापन - 55

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ दिल ही दिल में जो तीव्र पुरुषार्थी बच्चे हैं वह अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लक्ष्य से आगे बढ़ भी रहे हैं। और आगे बढ़ते-बढ़ते मंजिल पर पहुंच ही जायेंगे। **मैनारिटी अभी भी कभी अलबेलेपन में और कभी आलस्य के वश अटेन्शन भी कम दे रहे हैं। उन्हों का एक विशेष स्लोगन है - हो ही जायेंगे, जायेंगे. जाना है नहीं, जायेंगे। हो ही जायेगा - यह है अलबेलापन।**

➳ _ ➳ जाना ही है, यह है तीव्र पुरुषार्थी बापदादा वायदे बहुत सुनते हैं, बार-बार वायदे बहुत अच्छे करते हैं। बच्चे वायदे इतनी अच्छी हिम्मत से करते हैं जो उस समय बापदादा को भी बच्चे दिलखुश मिठाई खिला देते हैं। बाप भी खा लेते हैं। **लेकिन वायदा अर्थात् पुरुषार्थ में ज्यादा से ज्यादा फायदा।** अगर फायदा नहीं तो वायदा समर्थ नहीं है। तो वायदा भले करो फिर भी दिलखुश मिठाई तो खिलाते हो ना!

➳ _ ➳ **साथ-साथ तीव्र पुरुषार्थ की लगन को अग्नि रूप में लाओ। ज्वालामुखी बनो। समय प्रमाण रहे हुए जो भी मन के, सम्बन्ध-सम्पर्क के हिसाब-किताब हैं उसको ज्वाला स्वरूप से भस्म करो।** लगन है, इसमें बापदादा भी पास करते हैं लेकिन अभी लगन को अग्नि रूप में लाओ। विश्व में एक तरफ भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि होगी, दूसरे तरफ आप बच्चों का पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि ज्वाला रूप में आवश्यक है।

➳ _ ➳ यह ज्वाला रूप इस भ्रष्टाचार, अत्याचार के अग्नि को समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी। **आपकी लगन ज्वाला रूप की हो अर्थात् पावरफुल योग हो, तो यह याद की अग्नि, उस अग्नि को समाप्त करेगी और दूसरे तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करायेगी। बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्जवलित करायेगी। एक तरफ भस्म करेगी दूसरे तरफ शीतल भी करेगी। बेहद के वैराग्य की लहर फैलायेगी। बच्चे कहते हैं - मेरा योग तो है, सिवाए बाबा के और कोई नहीं, यह बहुत अच्छा है। परन्तु समय अनुसार अभी ज्वाला रूप बनो।**

➳ _ ➳ **जो यादगार में शक्तियों का शक्ति रूप, महाशक्ति रूप, सर्व शंखधारी दिखाया है, अभी वह महा शक्ति रूप प्रत्यक्ष करो।** चाहे पाण्डव हैं, चाहे शक्तियां हैं, सभी सागर से निकली हुई ज्ञान नदियां हो, सागर नहीं हो, नदी हो। ज्ञान गंगाये हो। **तो ज्ञान गंगायें अब आत्माओं को अपने ज्ञान की शीतलता द्वारा पापों की आग से मुक्त करो। यह है वर्तमान समय का ब्राह्मणों का कार्य।** अभी बापदादा को आना तो है ही।

पूछते हैं आगे क्या होगा? बापदादा आयेंगे या नहीं आयेंगे? बापदादा ना तो करते नहीं हैं, हाँ जी, हाँ जी करते हैं। बच्चे कहते हैं हजूर, बाप कहते हैं जी हाजिर। तो समझा क्या करना है, क्या नही **(30.03.99)**

➢➢ तीन लकीर तीन बिंदु

➳ _ ➳ **परमात्म पालना**

→ **जो सारे कल्प मे केवल अभी मिलती है।**

➳ _ ➳ पढाई

→ **ऐसा शिक्षक और कभी नही मिलता**

➳ _ ➳ वरदान

→ **होलीऐस्ट हाइऐस्ट रिचेस्ट हो**

➳ _ ➳ ऐसे रिचेस्ट बनने का साधन क्या है ??

→ **ऐसे रिचेस्ट बनने का साधन है तीन बिंदु**

- आत्मा
- परमात्मा
- ड्रामा

➳ _ ➳ जो जन्म से अंधे है वो भी बिंदु लगा सकते है

➳ _ ➳ तुम त्रिनेत्री हो बिंदु लगाना आसान है क्वेश्चन मार्क लगाना मुश्किल है।

➳ _ ➳ एक मे एक बिंदु लगाते जाओ तो बढता जाता है

→ सारे दिन मे चेक करो कि कितने बिंदुलगाए है

➳ _ ➳ **चाहे कर्मातीत बनना हो हर चीज की विधि ही तीन बिंदु लगाना है**

➳ _ ➳ ये तिलक अविनाशी है ये तिलक मिटे नही

→ इसकी चैंकिग करो सारे दिन भर अविनाशी तिलक लगा रहे

- चाहे अमृतवेला
- चाहे कर्म करे
- चाहे अशरीरी बनना हो
- चाहे मालामाल बनना है

➳ _ ➳ इसकी विधि है तीन बिंदु

➢➢ ज्वालामुखी योग

➳ _ ➳ **ज्वालामुखी योग से मन के बंधन सम्बंध सम्पर्क के बंधन संस्कारों के बंधन को समाप्त करो।**

→ संस्कारों का बंधन समाप्त करने के लिए

- मेहनत करनी है
- **कौन सा बंधन है ये जानना है**

➳ _ ➳ संसार मे एक तरफ भ्रष्टाचार एक तरफ अत्याचार की अग्नि है और तुम्हारी है योग की अग्नि।

→ योग की अग्नि से उस अग्नि को समाप्त करो

- आत्माओ को सहयोग दो
- शीतल स्वरूप मे स्थित करो
- वैराग्य की लहर फैलाओ
- पाप की अग्नि को समाप्त करो
- **आत्माओं को परमात्म प्रेम की अनुभूतिकराओ**
- महाशक्ति रूप प्रयत्क्ष करो चाहे पांडव हो चाहे शक्तियां

➳ _ ➳ वानप्रस्थी जैसे होते है वो अपना साधन और संकल्प दूसरो को दे देते है और निकल जाते है

➳ _ ➳ वैसे **तुम भी स्व के लिए नहीं दूसरो के लिए दाता बनो अखूट दानी बनो**

→ **जैसे ब्रह्मा बाबा के सामने कोई आता था तो अनुभूतिकरके ही जाता था**

- **वैसे तुम भी अखूट दानी बनो अखंड दानी बनो**

➢➢ योग

➳ _ ➳ **योग पावरफुल हो अग्नि रूप हो ज्वाला रूप हो**

→ जिससे वैराग्य की ज्वाला चारो ओर फैले

➳ _ ➳ वैराग्य अति सूक्ष्म है वो भाषण से नही फैलती

→ आचरण से फैलती है

→ **श्रेष्ठ धारणाओं से फैलती है**

➳ _ ➳ मनुष्य का स्वभाव है एक वस्तु से राग उत्पन्न होता है व फिर उससे दुख उत्पन्न होता है तो वैराग उत्पन्न होता है।

➳ _ ➳ तृष्णाओ के प्रति वितृष्णा का भाव

→ राग के जगत मे जीता है

➳ _ ➳ **तृष्णाओ के प्रति वितृष्णा का भाव हो**

➳ _ ➳ भोग कभी भी तृप्त न होने वाले होते है।

➳ _ ➳ जिससे तृप्ति आती है वो ज्यादा खाने की इच्छा नही होती व वही वास्तविक सुख है वास्तविक भोजन है।

→ जिससे तृप्तिनही होती वो वास्तविक भोजन नही है

➳ _ ➳ **बिना वैराग के इस अध्यात्मिक जीवन के मार्ग मे उन्नति हो नही सकती**

→ ये मार्ग तपस्या का मार्ग है।

→ त्याग का मार्ग है ।

→ ये मार्ग फूलो का रास्ता नही है।

■ आगे आगे आँधी है तूफान है सब कुछ सहन करने की ताकत चाहिए इस मार्ग मे।

➠ _ ➠ ऐसा जब होगा **तब ज्वालामुखी योग होगा पावरफुल योग होगा तब इस अग्नि से वो अग्नि समाप्त होगी**

➢➢ वैराग

➠ _ ➠ दूसरो को वैराग दिलाने के लिए

→ **हमारा जीवन तपस्वी जीवन हो**

→ आदर्श जीवन हो

→ श्रेष्ठ जीवन हो

→ **नैतिक मूल्यों मे परिपूर्ण जीवन हो**

➠ _ ➠ वैराग के विभिन्न प्रकार

→ मंद वैराग

→ मध्यम वैराग

→ अति तीव्र वैराग

→ श्मशानी वैराग

→ मरकट वैराग

➠ _ ➠ मरकट वैराग

→ **आशा के अनुभव पर विजय**

→ अनुभव है कि ये करो तो दुखमिलेगा।

→ ये सम्बंध सम्पर्क इतना है बढ़ायेंगे तो दुखमिलेगा

■ परंतु मन मानता नही फिर बढाता है तो दुखपाता है।

■ फिर वैराग फिर वही सम्बंध।

■ वही जाल वही बंधन

➠ _ ➠ **ये मनुष्य की गति है व भ्रांति का सुख है।**

➠ _ ➠ मनुष्य की जो भी इच्छायें है वो कभी पूर्ण नही है